卐 राम 卐

श्रीरामशरणम् : संक्षिप्त परिचय

श्रीरामशरणम् विशुद्ध आध्यात्मिक संस्था है

श्रीरामशरणम् – राम जी का घर, भक्तिभाव, प्रेम, शान्ति व शरणागति का मन्दिर। परस्पर प्रेम व भाईचारे की पाठशाला। यह आध्यात्मिक चेतना को जगाने के लिए एक अद्वितीय तपोभूमि है। यह आध्यात्मिक होने के साथ, जीवन में जीना अर्थात् सभी कर्तव्यों को भक्ति के साथ जोड़ कर निभाना सिखाती है। यहां अन्य गतिविधियों का कोई स्थान नहीं है। गुरुमुखी होकर, अनुशासन में रहते हुए 'सिमरन और सेवा' का अभ्यास ही यहां की साधना पद्धति है। यहां आने वाला 'अहं' को मिटाकर 'झुकना' सीखता है। श्रीरामशरणम् में प्रवेश करते ही positive vibrations, सारे मानसिक तनाव को दूर कर शान्ति और प्रेमभाव की सुगन्ध छोड़ जाती हैं।

आज की तनाव भरी जिन्दगी में मानव – प्रेम, दया, त्याग व अनुशासन आदि का अर्थ ही भूल चुका है। धर्म के कामों में अहं की पुष्टि, पैसा, दिखावा, दान-दक्षिणा, भेंट -चढ़ावा और भण्डारे आदि के चक्कर में व्यक्ति फंस जाता है फिर फंसता ही चला जाता है। अध्यात्म की ओर नहीं बढ़ पाता। मीडिया की प्रधानता के इस युग में धर्म के दिखावे वाले प्रचार ने, एक सच्चे जिज्ञासु का अध्यात्म के प्रति विश्वास हिला दिया है। ऐसे वातावरण में सच्चा संत व सच्चा आध्यात्मिक स्थान ढूंढना बहुत कठिन है। श्रीरामशरणम् वह स्थान है जहां व्यक्ति अपनी आत्मिक शान्ति के लिए आता है और एक भी पैसा खर्च किए बिना, भरपूर आनन्द लेकर tension free होकर जाता है।

हमारे गुरुजनों की विशेषताएं

हमारे उदार गुरुजन जीवन भर अपनी आध्यात्मिक कमाई बांटते रहे। जीवन भर उन्होंने दिया ही दिया, कभी कुछ लिया नहीं। हमारी पीड़ायें शान्त हों और कठिनाईयां दूर हों, इस हेतु वे सदा प्रार्थनारत रहते हैं।

हमारा परलोक सुधर सके, इस हेतु मार्गदर्शन व शक्तिपात भी करते हैं। हमारे तीनों गुरुजन **अखण्ड ब्रह्मचारी रहे हैं**, इन्होंने सांसारिक भोग-विलास से अपने को सर्वथा अलग रखा है। चरित्र निर्माण, सेवा व सिमरन इनके जीवन से परिलक्षित होते हैं। **इन्होंने कभी भी किसी से कोई भेंट स्वीकार नहीं की।**

श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज
(7.4.1868 – 13.11.1960)

परम पूज्य प्रातः स्मरणीय श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज 19वीं सदी के शान्त, दान्त, सिद्ध, उच्च कोटि के महान सन्त हुए हैं। उन्हें सच्चे अनुभवी, पहुंचे हुए, पूरे सत्गुरु एवं महान योगी के रुप में जाना जाता है। उनके सानिध्य व सम्पर्क की अनुभूति प्राप्त कर हम धन्य हुए हैं।

परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज
(2.10.1920 – 29.7.1993)

परम पूज्य श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी, परम भक्त एवं विनम्र सेवक पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज हैं। वे मन, वचन, कर्म से गुरुदेव की प्रतिमूर्ति हैं। उनकी कथनी-करनी एक रही है। मौन रह कर व कम बोल कर, वे साधकों को अपने जीवन एवं कार्यशैली से सिधाते रहे हैं। उनकी प्रबल संकल्प-शक्ति अद्भुत है। **वे अपना पूरा खर्चा स्वयं उठाते रहे।**

श्री स्वामी डॉ. विश्वामित्र जी महाराज
(15.3 1940 – 2.7.2012)

परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के अन्तरंग शिष्य डॉ. विश्वामित्र जी महाराज ने ऑल इंडिया इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साईंसिज़, (ऐम्ज़)नई दिल्ली में २२ वर्षों तक गौरवशाली सेवा की। वे एशिया के एकमात्र "**ऑक्यूलर माइक्रोबायोलोजिस्ट**" के रुप में विख्यात हुए। उनकी वाणी में विलक्षण तेज, ओज एवं सत्य का प्रभाव है। उनके तप का प्रभाव उनके **तेजोमय मुख-मण्डल** से स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है। **वे भी अपना पूरा खर्चा स्वयं उठाते रहे।**

पूज्यश्री महाराज जी, राम-नाम को जीवन का एक मात्र उद्देश्य बनाते हुए, अपने गुरुजनों द्वारा स्थापित उच्च आदर्श परम्पराओं का दृढ़तापूर्वक निर्वहन करते रहे हैं।

सत्संग की विशेषताएं

सत्संग में अमृतवाणी संकीर्तन व ग्रन्थों के पाठ, जप व प्रवचन होते हैं।
समयबद्धता व अनुशासन – सत्संग नियत समय पर प्रारम्भ होता है। सभी साधक पंक्तियों में शान्त-भाव के साथ बैठते हैं।
आडम्बर-विहीनता – भेंट या चढ़ावा नहीं, प्रसाद-वितरण व पुष्प-सज्जा नहीं।

नाम दीक्षा

पूज्य श्री स्वामी जी महाराज अपनी संकल्प-शक्ति से साधक के अन्तःकरण में '**रामनाम**' रुपी जाग्रत चैतन्य मंत्र को बीज की तरह स्थापित करते हैं। बीजारोपण एक विशेष प्रकार से तैयार की हुई भूमि में किया जाता है, देखभाल करने पर वह अंकुरित होता है और कालान्तर में वृक्ष बनता है। अतः साधक का कर्त्तव्य है, सुदृढ़ निश्चय के साथ सतत् साधनारत् रहे। जिस प्रकार अच्छा बीज उल्टा-सीधा कैसा भी भूमि में डाल दिया जाये, अवश्यमेव अंकुरित होता है, उसी प्रकार सिद्ध जाग्रत नाम(मंत्र) अवश्य ही अपना रंग दिखाता है।
तीनों गुरुजन राम नाम का प्रसाद सबको बांटते रहे हैं। शास्त्र कहता है गुरु मरता नहीं, गुरु शरीर नहीं, गुरु तत्व है, सूक्ष्म भाव है जो शाश्वत है। तीनों सद्गुरु भौतिक शरीर में नहीं होते हुए भी सदैव विराजमान हैं और इस राम नाम के कार्य को सुचारु रुप से और अधिक सक्रिय होकर चला रहे हैं। नाम दीक्षा भी दे रहे हैं।
शास्त्र कहता है कि गुरू के बिना गति नहीं, गुरू के बिना मुक्ति नहीं। गुरू के बिना ज्ञान भी अधूरा है। नाम दीक्षा के बाद साधक का भगवान के बैंक में खाता खुल जाता है। हम जो सद्कर्म करते हैं, वह उस खाते में जमा हो जाता है। दीक्षा लेते ही साधक गुरू के सुरक्षा चक्र में आ जाता है। राम नाम का बीज अपना काम स्वयं करता है। इसलिए निर्भय होकर सच्चे संतों की शरण में अर्थात श्रीरामशरणम् में आ जाओ।

गुरु तो ऐसा चाहिए...

गुरु तो ऐसा चाहिए, स्वार्थ से हो पार।
परमार्थ में रत रहे, कर पर हित उपकार।।
वास करे जिस स्थान में, कर हरि नाम विख्यात।
ईश प्रेम बाँटे सदा, पूछे जात न पात।।
सदगुरु चन्दन सम कहा, भगवद्-प्रेम सुवास।
निश दिन दान करे उसे, जो जन आवे पास।।
सच्चे सन्त के संग से, चढ़े भक्ति का रंग।
नित्य सवाया वह बढ़े, कभी न होवे भंग।।
गुरु संगति में बैठिए, सीखिए भक्ति-भेद।
सुनिए ज्ञान विचार को, पुस्तक दर्शन वेद।।

(श्री भक्तिप्रकाश 'गुरु महिमा' पृ52)

कार्यक्रम

1. प्रत्येक श्रीरामशरणम् में नियत समय पर दैनिक तथा साप्ताहिक सत्संग होता है।
2. प्रत्येक मंगलवार, पूर्णिमा, 2 तारीख, 13 तारीख, 29 तारीख को जाप एवं अन्य कार्यक्रम होते हैं।
3. व्यासपूर्णिमा, पूज्य गुरुजनों के अवतरण दिवस एवं निर्वाण दिवस के विशेष अवसरों पर पुष्पांजलि एवं विशेष सत्संग के कार्यक्रम भी होते हैं।
4. हरिद्वार, दिल्ली व अन्य स्थानों पर साधना सत्संग एवं खुले सत्संग आयोजित होते हैं। जिनमें दीक्षित साधक सम्मिलित होते हैं। गुरुजन इन्हें सिधाते हैं।

निवेदक : श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

अर्न्तराष्ट्रीय मुख्यालय :

श्रीरामशरणम्, 8ए, रिंग रोड,
लाजपत नगर-4, नई दिल्ली-110024

web.site- shreeramsharnam.org
E-mail addresses:
shreeramsharnam@hotmail.com
satsanglist@gmail.com

स्थानीय केन्द्रः